

ग्राम पंचायत तकीपुरा
की ओर से
समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएँ






सौजन्य से:- ग्राम पंचायत तकीपुरा, गिरोड़ा के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत बड़ोलीहौज
की ओर से सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ एवं
शहीदों को नमन ...






सौजन्य से:- ग्राम पंचायत बड़ोलीहौज के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत सिकन्द्री
की ओर से
समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएँ






सौजन्य से:- ग्राम पंचायत सिकन्द्री के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत अहिरखेड़ी
स्वतंत्रता दिवस
आप सभी देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ
एवं शहीदों को नमन ...






सौजन्य से:- ग्राम पंचायत अहिरखेड़ी, पालड़ी के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत गुहान
की ओर से
समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएँ







सौजन्य से:- ग्राम पंचायत गुहान के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत आरोदा कोट
की ओर से
समस्त देशवासियों को
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएँ







सौजन्य से:- ग्राम पंचायत आरोदा कोट के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत चांदनखेड़ी
स्वतंत्रता दिवस
15th AUGUST
की आप सभी को
हार्दिक शुभकामनाएँ






सौजन्य से:- ग्राम पंचायत चांदनखेड़ी के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत खड़ी
की ओर से
हार्दिक हार्दिक
शुभकामनाएँ







सौजन्य से:- ग्राम पंचायत खड़ी के समस्त ग्रामवासी

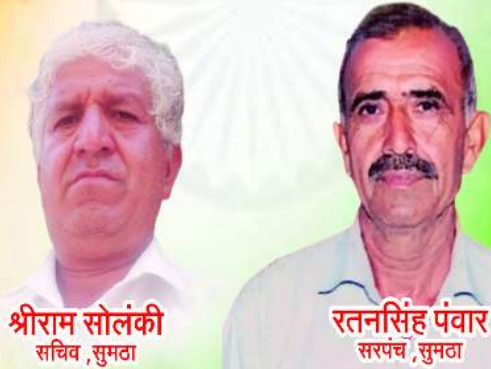
ग्राम पंचायत कड़ौदा
15th AUGUST
स्वतंत्रता दिवस
की हार्दिक
शुभकामनाएँ






सौजन्य से:- ग्राम पंचायत कड़ौदा

ग्राम पंचायत सुमठा की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं



श्रीराम सोलंकी
सचिव, सुमठा

रतनसिंह पंवार
सरपंच, सुमठा

सौजन्य से : ग्राम पंचायत सुमठा के समस्त ग्रामवासी

ग्राम पंचायत बान्याखेड़ी की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ



विष्णु चौधरी, सचिव

सुरेश, सहायक सचिव

गोकुलसिंह - कमलसिंह पंवार
सरपंच

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत बान्याखेड़ी के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत गोकलपुर की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं



मेघा महेंद्र माथुर
सचिव, गोकलपुर

दौलत बड़ोदिया
सरपंच, गोकलपुर

सौजन्य से : ग्राम गोकलपुर के समस्त ग्रामवासी

ग्राम पंचायत बनेड़िया की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत बनेड़िया के समस्त पंच एवं ग्रामवासी

ग्राम पंचायत गंगाजलखेड़ी की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत गंगाजलखेड़ी, चिमनखेड़ी

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से : ग्राम पंचायत पेमलपुर के समस्त ग्रामवासी

ग्राम पंचायत फुलान की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत फुलान के समस्त ग्रामवासी

संस्कार पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, रुषापुर कक्षा 1 से 12 वीं स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से - संस्कार पब्लिक उच्च माध्यमिक विद्यालय, रुषापुर

ग्राम पंचायत चिकलोंडा की ओर से स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत चिकलोंडा के समस्त पंच एवं ग्रामवासी



**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक
शुभकामनाएँ



राज कृष्णा
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, महु
संघ प्रिय सम्राट
अनुविभागीय अधिकारी पुलिस
रणजीतसिंह बघेल
थाना प्रभारी, बेटमा

सौजन्य से:- पुलिस थाना बेटमा



सौजन्य से : विनोद गुर्जर मित्र मण्डल, रुणजी- गौतमपुरा



राजेश उपाध्याय
सचिव
महेश छाड़िया
सहा. सचिव
मनोज छाड़िया
सरपंच

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत आगरा



नर्मदाबाई कुशवाह
सरपंच
रितेश कुशवाह
सरपंच प्रतिनिधि
प्रियेश जुबे
सह. सचिव
इंदरसिंह देवडा
सचिव

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत शिवगढ़



भगवान चौधरी
सचिव
विकास राठौर
सह.सचिव
लक्ष्मीनारायण पटेल
सरपंच प्रतिनिधि

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत बिजेपुर



सुदीपसिंह ठाकुर
सरपंच प्रतिनिधि
विक्रम नागर
सचिव
नीतु-केशव सिसोदिया
सरपंच

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत बिरगोदा



भुपेन्द्र मकवाना
सचिव
मुरलीधर मकवाना
सरपंच

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत अजंदा



राज कृष्णा
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, महु
संघ प्रिय सम्राट
अनुविभागीय अधिकारी पुलिस
अलका मेनिया
थाना प्रभारी, गौतमपुरा

सौजन्य से:- पुलिस थाना गौतमपुरा



**स्वतंत्रता
दिवस**
की हार्दिक
शुभकामनाएँ



राज कृष्णा
अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, महु
संच प्रिय सभाट
अनुविभागीय अधिकारी पुलिस
मीना कर्णावत
थाना प्रभारी, देपालपुर

सौजन्य से:- पुलिस थाना देपालपुर



ग्राम पंचायत बोरिया

**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक
शुभकामनाएँ



महेश कुशवाह
सचिव
कल्लु पटेल
उपसरपंच
पप्पुसिंह मुकवाना
सरपंच प्रतिनिधी
पर्वतसिंह डावर
सरपंच

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत बोरिया



ग्राम पंचायत अरन्या

**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक शुभकामनाएँ



श्रीमती हेमाबाई
शोभानसिंह दरवार
सरपंच
जितेन्द्रसिंह चौहान
सह. सचिव
विजेन्द्रसिंह राठोड़
सचिव
कसानसिंह दरवार
स. प्रतिनिधी

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत अरन्या



ग्राम पंचायत रोलाय

**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक
शुभकामनाएँ



चमनराम पोवाल
सचिव
केलाश चौहान
सह. सचिव
चरणसिंह चौधरी
उपसरपंच
शिवनारायण यादव
सरपंच प्रतिनिधी
आनंदीबाई यादव
सरपंच

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत रोलाय



ग्राम पंचायत पीरनलवासा

**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक शुभकामनाएँ



जयेश चतुर्वेदी
सचिव
आत्मारामजी आंजना
स. प्रतिनिधी

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत पीरनलवासा



ग्राम पंचायत रावद

**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक शुभकामनाएँ



सुनिल परमार
प्र.सरपंच
ओमप्रकाश चौहान
सचिव

सौजन्य से:- ग्राम पंचायत रावद



**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक
शुभकामनाएँ



राजेंद्र गामड़
श्रीमती विजयलक्ष्मी
गामड़
तोलाराम गामड़

गामड़ मित्र मंडल गोलपुरा विधानसभा सरदारपुर



**स्वतंत्रता
दिवस**

की हार्दिक
शुभकामनाएँ



जितेन्द्र चौहान
पत्रकार अमड़ौरा
हिमांशु चौहान
रघुनाथ यादव

जय हिंद



**भगवा
तिरंगा
कांवड़ यात्रा**

भक्ति भी - शक्ति भी - देशभक्ति भी
दिनांक 15 अगस्त 2026
समय प्रातः 11:00 बजे
प्रारंभ स्थान रत्नेश्वर महादेव मंदिर अमड़ौरा

15 अगस्त को भगवा तिरंगा कांवड़ यात्रा प्रारंभ होगी, जो रत्नेश्वर महादेव मंदिर से अमड़ौरा के 9 शिवालयों में जलमयिक हेतु निकलेगी।
माँ नर्मदा के पवित्र जल से अमड़ौरा नरेश राजा राजराजेश्वर का जलमयिक कर यात्रा का समापन होगा।
यात्रा उपरंत सभी श्रद्धालुओं के लिए सुलग आहार एवं खिचड़ी प्रसादी की व्यवस्था रहेगी।

यात्रा संयोजक श्री रघुनाथ यादव एवं समस्त ग्रामवासी अमड़ौरा
जय हिंद हर हर महादेव



प्यारा भारत देश हमारा
अपनी धरती, अपना नारा अपना भारत देश हमारा,
प्यारा भारत देश हमारा, जय प्यारा भारत देश,
प्रजातंत्र ने इसे संवारा, रखें इसका मान,
अब स्वतन्त्र है देश हमारा, हम इसकी संतान,
प्यारा भारत देश हमारा, जय प्यारा भारत देश हमारा,,,,।
रक्षा करता हिमालय इसकी, सागर करें यश गान,
वीरों की यह धरती प्यारी, हम इसकी संतान,
प्यारा भारत देश हमारा,,,,। प्यारा भारत देश हमारा,,,,।
गोतम, गांधी जन्में इस पर, जन्में भगत, सरदार
वीरों की यह धरती प्यारी हमको है, अभिमान,
प्यारा भारत देश हमारा,,,,।
प्यारा भारत देश हमारा,,,,।
गंगा, यमुना, सरयू, सरस्वती, करती कल-कल गान,
शस्य श्यामला इसकी धरा पर?, लहरायें हर धान,
प्यारा भारत देश हमारा.....। प्यारा भारत देश हमारा.....।



खाकी वर्दी से प्रशासन की कुर्सी तक... पंकज परमार ने लिखी संघर्ष और सफलता की ऐसी कहानी, जो युवाओं के लिए बनी मिसाल

भौरासा की गलियों से शुरू हुआ सफर, पुलिस कांस्टेबल की नौकरी के साथ एमपीपीएससी की तैयारी और लगातार असफलताओं के बाद 2023 में हासिल की 16वीं रैंक

देवास/धार, संदीप सेन। किसी मंजिल तक पहुंचने की कहानी केवल सफलता के दिन से नहीं लिखी जाती। उसके पीछे छिपे संघर्ष, अनगिनत रातों की मेहनत, छूटे हुए अवसर, बार-बार मिली असफलताएं और उन असफलताओं के बावजूद खुद पर कायम विश्वास ही उस कहानी को खास बनाते हैं। ऐसी ही प्रेरणादायी कहानी है पंकज परमार की, जिन्होंने ग्रामीण परिवेश से निकलकर अपनी मेहनत और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की वर्ष 2023 की परीक्षा में 16वीं रैंक हासिल की। आज पंकज परमार धार जिले में डिप्टी कलेक्टर के रूप में प्रशिक्षु अधिकारी के तौर पर प्रशासनिक सेवा की नई पारी शुरू कर चुके हैं। लेकिन इस मुकाम तक पहुंचने का उनका रास्ता सीधा और आसान नहीं था। एक समय वे इंदौर में पुलिस कांस्टेबल के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे थे। ड्यूटी की जिम्मेदारियों के बीच उन्होंने प्रशासनिक सेवा में जाने का सपना देखा। नौकरी के साथ पढ़ाई शुरू की। समय की कमी थी, जिम्मेदारियां थीं, चुनौतियां थीं और सबसे बड़ी बात—सफलता लगातार दूर दिखाई दे रही थी। लेकिन पंकज ने हार मानना नहीं सीखा। उन्होंने एक असफलता के बाद दूसरी कोशिश की, कमियों को समझा, तैयारी की रणनीति बदली और फिर परीक्षा दी। कई प्रयासों में अपेक्षित सफलता नहीं मिली, लेकिन हर असफलता उनके लक्ष्य को कमजोर करने के बजाय और मजबूत करती गई। अंततः वर्ष 2023 में मेहनत रंग लाई और एमपीपीएससी में 16वीं रैंक हासिल कर उन्होंने अपने सपने को हकीकत में बदल दिया।

भौरासा की मिट्टी से निकली प्रतिभा

पंकज परमार की कहानी की शुरुआत किसी बड़े शहर की महंगी कोचिंग या सुविधाओं से नहीं, बल्कि भौरासा गांव के सामान्य शैक्षणिक परिवेश से होती है। उन्होंने कक्षा पहली से आठवीं तक की शिक्षा भौरासा गांव में प्राप्त की। यहीं से उनकी शिक्षा की बुनियाद तैयार हुई। इसके बाद उन्होंने कक्षा नौवीं से बारहवीं तक देवास उत्कृष्ट विद्यालय में अध्ययन किया। स्कूली शिक्षा के दौरान ही अध्ययन के प्रति गंभीरता और आगे बढ़ने की ललक उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बनती गई। उन्होंने आगे चलकर कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग में स्नातक की पढ़ाई पूरी की। तकनीकी

शिक्षा हासिल करने के बाद भी उन्होंने अपने करियर की दिशा केवल निजी क्षेत्र तक सीमित नहीं रखी। उनके मन में प्रशासनिक सेवा में जाने की इच्छा थी और धीरे-धीरे यही इच्छा उनके जीवन का लक्ष्य बन गई।

इंजीनियरिंग के बाद पहनी खाकी, फिर प्रशासनिक सेवा का सपना

पंकज परमार की कहानी का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय वह है, जब वे पुलिस कांस्टेबल के रूप में इंदौर में पदस्थ थे। पुलिस की नौकरी अपने आप में जिम्मेदारी और अनुशासन से भरी होती है। ड्यूटी का समय हमेशा तय नहीं होता। कानून-व्यवस्था से जुड़ी जिम्मेदारियों के बीच अपने लिए अध्ययन का समय निकालना आसान नहीं होता। इसके बावजूद पंकज ने अपने बड़े लक्ष्य को नजरअंदाज नहीं किया। इसी दौरान उन्होंने तय किया कि उन्हें एमपीपीएससी परीक्षा के माध्यम से प्रशासनिक सेवा में जाना है। यह फैसला केवल करियर बदलने का निर्णय नहीं था, बल्कि इसके बाद शुरू हुआ एक लंबा संघर्ष। एक तरफ पुलिस की नौकरी और उसकी जिम्मेदारियां थीं, दूसरी तरफ प्रतियोगी परीक्षा की कठिन तैयारी। समय सीमित था, लेकिन सपना बड़ा था। उन्होंने समय का प्रबंधन किया। ड्यूटी के बाद पढ़ाई की। उपलब्ध समय को तैयारी में लगाया। अपनी कमजोरियों को पहचानकर उन्हें दूर करने का प्रयास किया और लगातार परीक्षा की तैयारी करते रहे।

जब सफलता बार-बार दूर हुई, तब भी नहीं छोड़ा लक्ष्य

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में सबसे कठिन दौर वह होता है, जब मेहनत के बावजूद परिणाम मन मुताबिक नहीं आता। पंकज परमार को भी इस दौर से गुजरना पड़ा। लगातार असफलताओं ने उन्हें चुनौती दी, लेकिन उन्होंने असफलता को अपनी पहचान नहीं बनने दिया। उन्होंने यह मानने से इनकार कर दिया कि एक परीक्षा में असफल होना जीवन में असफल होना है। हर असफलता के बाद उन्होंने अपनी तैयारी का मूल्यांकन किया। कहाँ कमी रह गई? किस विषय पर ज्यादा मेहनत की जरूरत है? समय प्रबंधन में क्या सुधार किया जा सकता है ? परीक्षा की रणनीति में क्या बदलाव होना चाहिए? इन सवालों के जवाब तलाशते हुए उन्होंने अपनी तैयारी जारी रखी। यही वह दौर था जिसने पंकज परमार के व्यक्तित्व को मजबूत किया। सफलता से पहले संघर्ष ने उन्हें धैर्य सिखाया और असफलताओं ने उन्हें अपनी गलतियों से सीखना सिखाया।



वर्ष 2023... जब मेहनत ने बदल दी पूरी कहानी

कई प्रयासों और लंबे संघर्ष के बाद वह दिन आया, जिसका पंकज परमार को लंबे समय से इंतजार था। एमपीपीएससी-2023 का परिणाम घोषित हुआ और पंकज परमार ने 16वीं रैंक हासिल की। यह सिर्फ एक रैंक नहीं थी। यह उन तमाम असफलताओं का जवाब था, जिनका उन्होंने सामना किया था। यह उन रातों का परिणाम था, जब नौकरी और जिम्मेदारियों के बीच उन्होंने किताबों को अपना साथी बनाया था। यह उस परिवार के विश्वास की जीत थी, जिसने कठिन दौर में उनका साथ दिया। 16वीं रैंक ने उनके करियर को नई दिशा दी और उन्हें प्रशासनिक सेवा में प्रवेश का अवसर मिला।

पुलिस कांस्टेबल से डिप्टी कलेक्टर तक का सफर

पंकज परमार के करियर का यह परिवर्तन अपने आप में प्रेरणादायी है। एक ओर पुलिस विभाग में कांस्टेबल के रूप में जमीनी स्तर पर कानून-व्यवस्था और जनता से जुड़े अनुभव हासिल किए, वहीं दूसरी ओर एमपीपीएससी में सफलता प्राप्त करने के बाद प्रशासनिक सेवा में प्रवेश किया। आज वे धार जिले में डिप्टी कलेक्टर के रूप में प्रशिक्षु अधिकारी हैं। यानी जिस व्यक्ति ने कभी पुलिस की वर्दी पहनकर अपने कर्तव्य निभाए, वही व्यक्ति अब प्रशासनिक अधिकारी के रूप में शासन की व्यवस्थाओं को करीब से समझ रहा है। यह बदलाव केवल पद का बदलाव नहीं है। यह उनके वर्षों के संघर्ष और लक्ष्य के प्रति समर्पण की कहानी है।

पिता प्राचार्य, मां गृहणी... परिवार से मिली संस्कारों की ताकत

पंकज परमार की सफलता के पीछे उनके परिवार की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही। उनके पिता समंदर सिंह परमार वर्तमान में हाई सेकेंडरी स्कूल जामगोद में प्राचार्य के पद पर पदस्थ हैं। शिक्षा के क्षेत्र में पिता की भूमिका ने पंकज के जीवन में अनुशासन, अध्ययन और निरंतर सीखने का महत्व स्थापित किया। उनकी माता श्रीमती प्रेमलता परमार

गृहणी हैं। परिवार को संभालने के साथ उन्होंने बेटे के सपनों और संघर्ष में महत्वपूर्ण सहयोग दिया। पंकज की सफलता में उनके परिवार का भावनात्मक और नैतिक सहयोग लगातार बना रहा। उनकी पत्नी श्रीमती मृगाक्षी परमार ने भी उनके संघर्षपूर्ण सफर में साथ दिया। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के दौरान परिवार का सहयोग किसी भी अभ्यर्थी के लिए मानसिक मजबूती देता है। पंकज के मामले में भी यह सहयोग उनकी यात्रा का अहम हिस्सा रहा। उनके भाई रवि परमार हैं, जबकि उनकी बहन करमा परमार शिक्षिका हैं। इस प्रकार परिवार में शिक्षा और अनुशासन का वातावरण भी उनके व्यक्तित्व को मजबूत करने में सहायक रहा।

दोस्त और शिक्षक भी बने सफलता की यात्रा के साथी

पंकज परमार अपनी सफलता को केवल अपनी मेहनत का परिणाम नहीं मानते। उनका मानना है कि किसी भी व्यक्ति की सफलता के पीछे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कई लोगों का योगदान होता है। उनके माता-पिता ने उन्हें संस्कार और आधार दिया, पत्नी ने संघर्ष के दौरान साथ दिया, दोस्तों ने कठिन समय में हौसला बढ़ाया और शिक्षकों ने दिशा दिखाई। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया होती है। इस दौरान मानसिक दबाव, अनिश्चितता और परिणाम को लेकर चिंता बनी रहती है। ऐसे समय में परिवार और मित्रों का सकारात्मक सहयोग अभ्यर्थी को दोबारा खड़े होने की ताकत देता है। पंकज के मामले में भी यह सहयोग उनकी सफलता की यात्रा में महत्वपूर्ण रहा।

उनकी सफलता का सबसे बड़ा सूत्र— रुकना नहीं

पंकज परमार की कहानी को यदि एक वाक्य में समझना हो तो वह है—लगातार प्रयास। उन्होंने असफलता के बाद तैयारी छोड़ने के बजाय तैयारी का तरीका बदला। उन्होंने परिस्थिति को दोष देने के बजाय अपने प्रयासों पर ध्यान दिया। उन्होंने नौकरी को अपनी

मजबूरी मानकर लक्ष्य छोड़ा नहीं, बल्कि नौकरी के साथ ही अपने सपने को आगे बढ़ाया। और सबसे महत्वपूर्ण बात—उन्होंने अपने लक्ष्य को समय दिया। यही वजह है कि उनकी कहानी उन युवाओं के लिए विशेष महत्व रखती है, जो एक-दो असफलताओं के बाद निराश होकर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी छोड़ देते हैं।

युवाओं से पंकज की अपील—असफलता से घबराएं नहीं

पंकज परमार का युवाओं के लिए संदेश बेहद सरल, लेकिन प्रभावशाली है। उनका कहना है— ‘सफलता एक दिन में नहीं मिलती, एक दिन जरूर मिलती है।’ वे कहते हैं कि जीवन में व्यक्ति को लगातार प्रयास करते रहना चाहिए। किसी एक परीक्षा में असफल होना यह साबित नहीं करता कि व्यक्ति सफल नहीं हो सकता। असफलता के बाद अपनी कमियों को पहचानना चाहिए, तैयारी में सुधार करना चाहिए और फिर नए उत्साह के साथ प्रयास करना चाहिए। उनका मानना है कि सफलता के लिए धैर्य सबसे जरूरी है। जो व्यक्ति लंबे समय तक अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार रहकर मेहनत करता है, उसे किसी न किसी दिन सफलता जरूर मिलती है।

ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए भी बड़ी प्रेरणा

पंकज परमार की उपलब्धि का महत्व इसलिए भी बढ़ जाता है, क्योंकि उनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्रामीण क्षेत्र में हुई। भौरासा गांव से पढ़ाई शुरू करने वाला एक विद्यार्थी उत्कृष्ट विद्यालय तक पहुंचा, फिर इंजीनियरिंग की शिक्षा हासिल की, पुलिस विभाग में नौकरी की और कठिन परीक्षा की तैयारी की। यह सफर उन विद्यार्थियों को संदेश देता है कि सफलता का रास्ता केवल बड़े शहरों से होकर नहीं गुजरता। संसाधन सीमित हो सकते हैं, लेकिन सपने सीमित नहीं होने चाहिए। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, मेहनत लगातार हो और असफलताओं से सीखने का साहस हो तो ग्रामीण क्षेत्र का विद्यार्थी भी प्रदेश की प्रतिष्ठित प्रशासनिक सेवा में अपना स्थान बना सकता है।

नौकरी के साथ प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी करने वालों के लिए मिसाल

आज हजारों युवा सरकारी नौकरी में रहते हुए एमपीपीएससी, क्लष्ट और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं। उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती समय की होती है। पंकज परमार का अनुभव ऐसे युवाओं के लिए महत्वपूर्ण है। उन्होंने स्वयं पुलिस कांस्टेबल की

नौकरी करते हुए परीक्षा की तैयारी की। उनके सामने भी समय की कमी थी, लेकिन उन्होंने यह तय किया कि नौकरी और लक्ष्य दोनों को साथ लेकर चलना है। उनका सफर बताता है कि तैयारी के लिए हमेशा परिस्थितियां आदर्श होने का इंतजार नहीं किया जा सकता। समय निकाला जाता है। अनुशासन बनाया जाता है। लक्ष्य के अनुसार प्राथमिकताएं तय की जाती हैं। और फिर उसी दिशा में लगातार मेहनत की जाती है।

परिवार का सपना, बेटे की मेहनत और सफलता की खुशी

पंकज परमार की सफलता केवल उनके व्यक्तिगत करियर की उपलब्धि नहीं है। यह उनके परिवार के लिए भी गौरव का क्षण है। जिस बेटे को पिता ने शिक्षा का महत्व समझाया, जिस मां ने परिवार के बीच उसके सपनों को मजबूती दी, जिस पत्नी ने संघर्ष के दौर में साथ दिया, जिस भाई-बहन ने हौसला बढ़ाया, जिन दोस्तों और शिक्षकों ने मार्गदर्शन दिया—उन सभी के लिए एमपीपीएससी में 16वीं रैंक किसी सामूहिक उपलब्धि से कम नहीं। यह सफलता बताती है कि जब परिवार का विश्वास और व्यक्ति की मेहनत एक साथ जुड़ते हैं तो बड़े से बड़ा लक्ष्य भी हासिल किया जा सकता है।

आज भी सफलता को मंजिल नहीं, नई जिम्मेदारी मानते हैं

एमपीपीएससी में 16वीं रैंक हासिल करना निश्चित रूप से बड़ी उपलब्धि है, लेकिन प्रशासनिक सेवा में प्रवेश के साथ जिम्मेदारियां भी बढ़ जाती हैं। वर्तमान में धार में डिप्टी कलेक्टर के रूप में प्रशिक्षु अधिकारी के तौर पर पंकज प्रशासनिक कार्यप्रणाली को समझ रहे हैं। अब उनकी यात्रा का अगला चरण केवल व्यक्तिगत सफलता का नहीं, बल्कि जनता के प्रति जिम्मेदारी निभाने का है। पुलिस सेवा में जमीनी स्तर का अनुभव और अब प्रशासनिक प्रशिक्षण—दोनों अनुभव भविष्य में उनकी कार्यशैली के लिए महत्वपूर्ण आधार बन सकते हैं।

संघर्ष से निकली सफलता की कहानी

पंकज परमार की पूरी यात्रा को देखा जाए तो इसमें कई पड़ाव दिखाई देते हैं— भौरासा में प्रारंभिक शिक्षा ? देवास उत्कृष्ट विद्यालय ? कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग में स्नातक ? इंदौर में पुलिस कांस्टेबल के रूप में सेवा ? नौकरी के साथ एमपीपीएससी की तैयारी ? लगातार असफलताएं ? हार न मानने का निर्णय ? एमपीपीएससी-2023 में 16वीं रैंक ? प्रशासनिक सेवा में चयन ? धार में डिप्टी कलेक्टर के रूप में प्रशिक्षण। हर पड़ाव अपने आप में एक कहानी है।

तिरंगा यात्रा में एसडीएम की गैरमौजूदगी पर उठे सवाल, प्रशासनिक सहभागिता को लेकर देपालपुर में चर्चा



देपालपुर। स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में देपालपुर में गुरुवार को हर घर तिरंगा अभियान के तहत भव्य तिरंगा बाइक रैली निकाली गई। नगर से लेकर ग्रामीण अंचल तक बड़ी संख्या में युवाओं ने इसमें सहभागिता की। हाथों में तिरंगा, देशभक्ति के नारों और राष्ट्रप्रेम के उत्साह से पूरा नगर सराबोर नजर आया। जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और नागरिकों की मौजूदगी ने आयोजन को व्यापक स्वरूप दिया। रैली का शुभारंभ कृषि उपज मंडी परिसर से हुआ। यहां से बेटमा नाका, तहसील रोड, चमन चौराहा, मुख्य बाजार और विजय स्तंभ चौक होते हुए रैली मंगलेश्वर मंदिर पहुंची। मंदिर में भगवान मंगलेश्वर महादेव के दर्शन के बाद पंचामृत अभिषेक किया गया। इसके पश्चात रैली इंदौर नाका स्थित महाराणा प्रताप प्रतिमा स्थल पहुंची, जहां प्रतिमा पर माल्यार्पण कर नमन किया गया और कार्यक्रम का समापन हुआ। रैली में देपालपुर विधायक मनोज पटेल के पुत्र निरल पटेल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए।



नगर और ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं की बड़ी भागीदारी के बीच आयोजन में राष्ट्रभक्ति का उत्साह स्पष्ट दिखाई दिया।

जब पूरा प्रशासनिक तंत्र नजर आया सक्रिय, तब एसडीएम की गैरमौजूदगी बनी चर्चा का विषय

इस पूरे आयोजन का एक पहलू ऐसा भी रहा, जिसने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। जहां विभिन्न अधिकारी, जनप्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता तिरंगा यात्रा में सहभागिता करते दिखाई दिए, वहीं देपालपुर एसडीएम चरणजीत सिंह हुड्डा की अनुपस्थिति को लेकर सवाल उठने लगे। स्वतंत्रता दिवस और हर घर तिरंगा जैसे राष्ट्रीय अभियान केवल औपचारिक कार्यक्रम नहीं हैं। ऐसे आयोजनों में प्रशासनिक अधिकारियों की सहभागिता को शासन की जनभागीदारी और

राष्ट्रव्यापी अभियान के प्रति प्रशासनिक प्रतिबद्धता के संकेत के रूप में देखा जाता है। ऐसे में स्थानीय प्रशासन के महत्वपूर्ण पद पर बैठे एसडीएम की गैरमौजूदगी को लेकर नागरिकों के बीच चर्चा होना स्वाभाविक है। हालांकि एसडीएम की अनुपस्थिति के पीछे क्या प्रशासनिक कारण था, इसकी आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। यही वजह है कि अब सवाल यह है कि क्या एसडीएम को किसी महत्वपूर्ण प्रशासनिक दायित्व के कारण कार्यक्रम से दूर रहना पड़ा या फिर आयोजन में उनकी सहभागिता को लेकर कोई अन्य कारण था?

प्रशासनिक जवाबदेही पर भी उठने लगे सवाल

एसडीएम तहसील स्तर पर प्रशासनिक व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी होते हैं। राजस्व, कानून-व्यवस्था, विभिन्न शासकीय



अभियानों के समन्वय और शासन की योजनाओं के क्रियान्वयन में एसडीएम की भूमिका अहम होती है। ऐसे में राष्ट्रीय महत्व के अभियान से जुड़े सार्वजनिक कार्यक्रम में उनकी अनुपस्थिति को लेकर प्रशासन को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए, ताकि अनावश्यक चर्चाओं को विराम मिल सके। सवाल यह भी है कि यदि एसडीएम किसी अपरिहार्य प्रशासनिक कार्य में व्यस्त थे तो क्या इसकी जानकारी आयोजकों अथवा आम नागरिकों को दी गई? यदि कोई पूर्व निर्धारित शासकीय दायित्व था, तो उसकी प्रकृति क्या

थी? और यदि ऐसा कोई दायित्व नहीं था, तो राष्ट्रीय अभियान के इस सार्वजनिक आयोजन में प्रशासनिक नेतृत्व की प्रत्यक्ष मौजूदगी क्यों नहीं दिखाई दी?

स्कूली बच्चों की तिरंगा रैली ने भी दिया राष्ट्रप्रेम का संदेश

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नगर में स्कूली विद्यार्थियों ने भी तिरंगा रैली निकाली। नगर परिषद उपाध्यक्ष गोपाल कटेसरिया के अनुसार विभिन्न विद्यालयों के

विद्यार्थी हाथों में राष्ट्रीय ध्वज लेकर प्रमुख मार्गों से निकले और कन्या शाला स्कूल पहुंचकर रैली का समापन किया। बच्चों के उत्साह और देशभक्ति के नारों से नगर का वातावरण राष्ट्रप्रेम से भर गया। एक ओर युवाओं की बाइक रैली और दूसरी ओर स्कूली बच्चों की तिरंगा रैली ने यह संदेश दिया कि राष्ट्रीय पर्व को लेकर समाज के हर वर्ग में उत्साह है।

अब एसडीएम से जवाब की अपेक्षा

देपालपुर में आयोजित दोनों तिरंगा रैलियों में नागरिकों और युवाओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी ने प्रशासन के सामने भी जनभागीदारी का एक मजबूत उदाहरण रखा है। ऐसे में एसडीएम चरणजीत सिंह हुड्डा की गैरमौजूदगी को लेकर उठ रहे सवालों पर प्रशासन की ओर से स्पष्ट स्थिति सामने आना जरूरी है। मुद्दा किसी व्यक्ति विशेष की आलोचना का नहीं, बल्कि राष्ट्रीय अभियान में प्रशासनिक सहभागिता और जवाबदेही का है। यदि एसडीएम की अनुपस्थिति के पीछे कोई शासकीय अथवा अपरिहार्य कारण था तो उसे सार्वजनिक किया जाना चाहिए। वहीं यदि ऐसा कोई कारण नहीं था, तो राष्ट्रीय महत्व के आयोजन में स्थानीय प्रशासन के शीर्ष अधिकारी की अनुपस्थिति पर सवाल उठना स्वाभाविक है। अब देखना यह है कि देपालपुर प्रशासन इस सवाल का क्या जवाब देता है और एसडीएम चरणजीत सिंह हुड्डा की तिरंगा यात्रा से दूरी की वास्तविक वजह क्या थी।

थाना रोड रात में बन रहा ट्रांसपोर्ट नगर, ट्रक पार्किंग से बढ़ी परेशानी

गौतमपुरा। नगर परिषद गौतमपुरा द्वारा नगर के इस क्षेत्र में सुंदर और चौड़ी सड़क का निर्माण कराया गया है। दिन में यह सड़क शहर की बेहतर सड़कों में नजर आती है, लेकिन रात होते ही इसकी तस्वीर बदल जाती है। रात करीब 9 बजे के बाद थाना रोड पर ट्रकों की पार्किंग शुरू हो जाती है और देखते ही देखते सड़क का बड़ा हिस्सा ट्रकों से घिर जाता है। देर रात तक ट्रकों के खड़े रहने और सुबह एक-एक कर रवाना होने का सिलसिला चलता रहता है। इस सड़क का उपयोग रात के समय बड़ी संख्या में महिला, पुरुष और बच्चे घूमने-फिरने के लिए करते हैं। ऐसे में सड़क के दोनों ओर अथवा घरों के सामने ट्रकों के खड़े होने से पैदल चलने वालों को परेशानी का सामना करना पड़ता है। कई बार बड़े वाहनों के कारण आवागमन का रास्ता भी संकरा हो जाता है।

ट्रकों के शोर और धुएं से रहवासी परेशान

रहवासियों के अनुसार रात में



ट्रकों के इंजन चालू-बंद होने, वाहनों के आने-जाने और हॉर्न आदि के कारण काफी शोर होता है। इसके अलावा ट्रकों से निकलने वाले धुएं से भी आसपास रहने वाले लोगों को परेशानी होती है। सुबह के समय जब ट्रक रवाना होते हैं, तब भी सड़क पर आवाजाही प्रभावित होती है। सबसे गंभीर स्थिति उस समय बनती है, जब सामान्य ट्रकों के साथ केमिकल से भरे टैंकर भी यहां आकर खड़े हो जाते हैं। रहवासियों का कहना है कि आबादी वाले क्षेत्र में इस तरह के वाहनों की रात्रिकालीन पार्किंग सुरक्षा की दृष्टि से भी चिंता का विषय है। हालांकि किसी संभावित दुर्घटना की

पुष्टि नहीं हुई है, लेकिन स्थानीय स्तर पर इसे गंभीरता से लेने की जरूरत बताई जा रही है।

घर-दुकानों के सामने पार्किंग, सीसीटीवी भी हो रहे प्रभावित

स्थानीय लोगों का कहना है कि कई बार ट्रक घरों और दुकानों के सामने खड़े कर दिए जाते हैं। इससे रात में घर से निकलने या वाहन निकालने में भी परेशानी होती है। क्षेत्र में दुकानों और मकानों पर सुरक्षा के लिए

सीसीटीवी कैमरे लगे हुए हैं, लेकिन सड़क किनारे बड़े ट्रकों के खड़े हो जाने से कैमरों का सड़क वाला दृश्य कई बार ढक जाता है। ऐसे में सड़क पर होने वाली सामान्य आवाजाही या किसी घटना की रिकॉर्डिंग प्रभावित होने की आशंका रहती है।

मना करने पर विवाद की स्थिति

स्थानीय लोगों के सामने एक और समस्या यह है कि ट्रक चालकों से सड़क पर वाहन खड़ा नहीं करने का आग्रह करने पर कई बार विवाद की स्थिति बनने की आशंका रहती है। रहवासियों का कहना है कि यदि समय रहते पार्किंग व्यवस्था को नियंत्रित नहीं किया गया तो भविष्य में छोटी-सी बात भी बड़े विवाद का रूप ले सकती है। क्षेत्रवासियों ने नगर परिषद और पुलिस विभाग से मांग की है कि थाना रोड को रात में भारी वाहनों की पार्किंग का स्थान बनने से रोका जाए।

धामनोद में कथित अवैध कारोबारों का 'खुला खेल'!

धामनोद, संदीप सेन 9755161156। धार जिले के धामनोद थाना क्षेत्र में कथित तौर पर जुआ-सट्टा, अवैध शराब बिक्री और फोरलेन से लगे होटल-ढाबों में संदिग्ध गतिविधियों को लेकर पुलिस की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। स्थानीय स्तर पर चर्चा है कि थाना क्षेत्र में लंबे समय से विभिन्न प्रकार के अवैध कारोबार संचालित होने के बावजूद प्रभावी कार्रवाई नहीं होना कहीं न कहीं पुलिस की निगरानी व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाता है। स्थानीय लोगों और कारोबार से जुड़े कुछ लोगों द्वारा लगाए जा रहे आरोपों के अनुसार धामनोद क्षेत्र की गुमटियों, होटल और ढाबों में कथित रूप से अवैध शराब की बिक्री होती है। वहीं फोरलेन से सटे कुछ होटल-ढाबों को लेकर आरोप है कि वहां संदिग्ध तरीके से सीमेंट, पेट्रोल-डीजल, केमिकल टैंकरों तथा मालवाहक वाहनों से जुड़े चोरी के माल की खरीद-फरोख्त की गतिविधियां होती हैं। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि होना अभी बाकी है, लेकिन यदि इनमें तथ्य है तो यह मामला केवल स्थानीय अवैध कारोबार तक सीमित नहीं, बल्कि राजमार्ग सुरक्षा और संगठित अपराध की निगरानी से भी जुड़ सकता है। धामनोद थाना क्षेत्र में फोरलेन का इलाका पुलिस की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां लगातार भारी मालवाहक वाहनों, टैंकरों और अन्य व्यावसायिक वाहनों की आवाजाही होती है। ऐसे में बीट पुलिस की जिम्मेदारी और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। स्थानीय स्तर पर चर्चा है कि फोरलेन क्षेत्र में आने वाले कुछ होटल-ढाबा संचालकों से पुलिस के बीट स्तर पर कथित रूप से नियमित संपर्क रहता है।





जिनके अमर बलिदान से मिली स्वतंत्रता
उन वीरों को शत-शत नमन

नया मध्यप्रदेश

समानता का विश्वास, समावेशी विकास



नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री



‘स्वतंत्रता हमें केवल अधिकार नहीं देती, बल्कि यह कर्तव्य का स्मरण भी कराती है। आइए, हम सब मिलकर प्रदेश के समग्र विकास और समृद्धि के लिए निरंतर प्रयासरत रहने का संकल्प लें।’

डॉ. मोहन यादव
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

प्रदेशवासियों को
80वें स्वाधीनता
दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं



जुड़ें नए मध्यप्रदेश से

D11080/26